कला दीर्घा

उत्कर्ष प्रतिष्ठान, लखनऊ

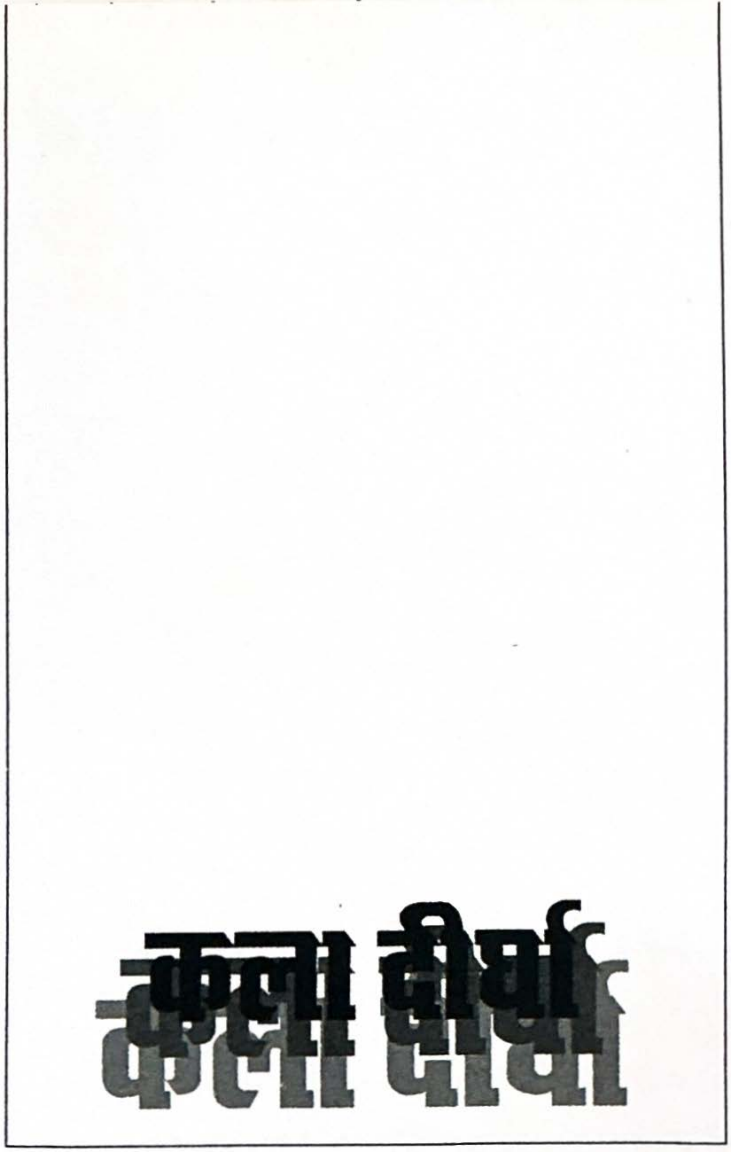

कला दीर्घा

दृश्य कला की छमाही पत्रिका, अप्रैल 2001, वर्ष 1, अंक 2

उत्कर्ष प्रतिष्ठान, लखनऊ

कला दीर्घा

दृश्य कला की छमाही पत्रिका, अप्रैल 2001, वर्ष 1, अंक 2

मूर्तिशिल्प. जी.के. म्हात्रे

सम्पादक
अवधेश मिश्र

सम्पादकीय सम्पर्क
12/179 इंदिरा नगर, लखनऊ – 226016, दूरभाष – 0522–358007

सह सम्पादक
डा0 शेफाली भटनागर, एस.के. श्रीवास्तव

सहयोग
आर.पी. भटनागर, हेमराज, उत्तमा

आवरण – प्रथम
रतन परिमू, कान्फीगरेशन विद मंत्र, 1966 कैनवास पर तैल

आवरण – चतुर्थ
अवधेश मिश्र, संयोजन 2000, कैनवास पर मिक्स्ड मीडिया

प्रकाशक
अंजू सिन्हा

उत्कर्ष प्रतिष्ठान, 1/95 विनीत खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ–226010
दूरभाष – 0522–393745

मुद्रक
प्रकाश पैकेजर्स 257 गोलागंज, लखनऊ–226018 दूरभाष – 0522–221011

वितरक
वाणी प्रकाशन, 21A, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 दूरभाष – 011–3273167
मूल्य– रु. 100/–

सम्पादन/संचालन अवैतनिक

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं, सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला दीर्घा

दृश्यकला की छमाही पत्रिका, अप्रैल 2001, वर्ष 1, अंक 2

[illegible]

संदेश

कला–दीर्घा का प्रवेशांक (प्रथम अंक) देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ, मुझे यहाँ अपनी आभारयुक्त प्रसन्नता व्यक्त करने का अनुभव हो रहा है। इस प्रथम अंक द्वारा ही कला दीर्घा ने अपनी उपस्थिति दर्ज कर दी है। इसके लिए इसकी प्रेरणा शक्ति श्रीमती अंजू सिन्हा तथा संपादक श्री अवधेश मिश्र जी हमारे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन द्वारा एक बड़ी कमी की पूर्ति हुई है। बहुत समय से भारतीय कला के विभिन्न क्षेत्रों पर अध्ययन एवं प्रकाशनों के केन्द्र मुख्यतः विदेशों में अथवा अपने देश में ही कुछ सीमित क्षेत्रों में, अंग्रेजी भाषा–संस्कृति वाले समाज तक सीमित हो गया था। इससे दो विकृतियाँ उत्पन्न हुईं; एक तो कला समीक्षाएँ उसी शीशे के घर के कृत्रिम वातावरण में अवरुद्ध हो गईं तो दूसरी ओर उसका दृष्टिकोण ही कुंठित मनोग्रस्तता से घिर गया। विगत वर्षों में विदेशी विद्वानों और अध्येताओं की बाढ़ आ गई। उनका भारत के प्रति एक पूर्वाग्रही दृष्टिकोण भारतीय कला को अवरुद्ध करने में आज भी प्रतिफलित होता रहता है। अतः **नई पीढ़ी के अध्येताओं और विद्यार्थियों दोनों में उन्मुक्तता के लिए छटपटाहट होनी ही** चाहिए। समस्या तब उत्पन्न होती है जब हमारी नई पीढ़ियाँ उन रूढ़िग्रस्त विचारों को आत्मसात् कर उन्हीं पैमानों का संरक्षण और उनका पल्लवन करने में ही अपनी समस्त ऊर्जा का अपव्यय कर डालते हैं, उन्हीं विचार पद्धतियों में श्वास–प्रश्वास लेते रहते हैं, उसी में जीते हैं।

इस चुनौती भरे वातावरण में **कला दीर्घा** जैसे सांस्कृतिक और कलात्मक विचारपूर्ण प्रकाशन का स्वागत स्वयं अपने आप में हो रहा है, शुभ लक्षण है। भारतीय भाषाओं के इस दिशा में प्रकाशनों की यों भी कमी है और जो प्रकाशन यदा–कदा मिलते भी हैं उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर क्या, हम राष्ट्रीय स्तर पर रखने तक में संकोच का अनुभव करते हैं– लेखन के स्तर पर भी और प्रकाशन के स्तर पर भी। अतएव **कला दीर्घा जैसे प्रकाशनों ने इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया और एक स्तरीय मानदंड उपस्थिति किया, यह श्लाघ्य है।** यह आशा की प्रथम किरण के समान उदित हुई और क्रमशः इसकी गरिमा बढ़ती जायेगी, इसमें संदेह नहीं। फिर यह पूर्ण विकसित हो पूर्ण चंद्र के समान प्रकाशित होगी, यह इसके सुयोग्य संचालन एवं संपादन प्रकाश से स्पष्ट है। आर्थिक रूप से यह जोखिम भरा काम है, अतएव संचालक–प्रकाशक और प्रकारांतर से संपादक भी अपने साहस की परीक्षा दे रहे हैं। उनकी सफलता की कामना है और उन नए पुराने लेखकों को भी जो इस मंच से अपनी विचार पद्धति एवं लेखन अभिव्यक्ति को यहाँ उपस्थित कर रहे हैं, इसे समृद्ध कर रहे हैं, नई भाषा और मुहावरों का सृजन कर रहे हैं।

बनारस

1 मार्च, 2001 — **राय आनंद कृष्ण**

कला दीर्घा

नव कला की छमाही पत्रिका, अप्रैल 2001, वर्ष 1, अंक 2

पीलू पोचखनवाला, मुंबई

कला दीर्घा

दृश्य कला की छमाही पत्रिका, अप्रैल 2001, वर्ष 1, अंक 2

रेखांकन 1999 राजीव मिश्र

अनुक्रम

सम्पादकीय 7

संस्कृति और कला – राम गोपाल विजयवर्गीय 9

Understanding Art-Dinkar Kowshik 13

भारत कला भवन में संग्रहीत आचार्य गगनेन्द्र नाथ ठाकुर के कुछ चित्र – प्रो राय आनन्द कृष्ण 19

Evidence on Self Portrain Painting in Indian Art - S P Verma 26

भारतीय कला के शाश्वत अभिप्राय – डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल 31

Gods and Men Demons and violance Ninteenth Cent. Lithgraph of Banaras – Dr. Anjan Chakravarty 37

जयपुर की ब्लू पॉटरी – मोहन लाल गुप्त 44

Art : Call to Double Duty – Keshav Malik 49

भारतीय आधुनिक चित्रकला में सामाजिक संदर्भ – डॉ. शेफाली भटनागर 54

Thoughts on concretizing the abstraction - Ratan Parimoo 61

लखनऊ में वाश चित्रण : एक विहंग दृष्टि – अवधेश मिश्र 67

Five Decades of Bombay sculpture-1947 onwards – Deepak Kannal 75

Spl. Report - Installation Workshop : 2001 – Ramakrishna Vedala 80

कला दीर्घा

दृश्य कला की छमाही पत्रिका, अप्रैल 2001, वर्ष 1, अंक 2

जलरंग, नित्यानन्द महापात्र

कला दीर्घा

दृश्य कला की त्रैमासिक पत्रिका, अप्रैल 2001, वर्ष 1, अंक 2

सम्पादकीय

विगत दिनों राष्ट्रीय ललित कला केन्द्र, लखनऊ द्वारा आयोजित 'कला शिक्षा' विषय पर संगोष्ठी सम्पन्न हुई। देश के प्रख्यात कला समीक्षक, कला विद् और सौंदर्यशास्त्रियों ने भाग लिया। विषय से सम्बन्धित अनेक बिन्दुओं पर चर्चा हुई, कुछ नए बिन्दु भी उभरे। आवश्यकता महसूस की गयी कि प्राथमिक स्तर पर ही कला शिक्षा पर ध्यान दिया जाना चाहिए और इसे अन्य विषयों के समतुल्य ही महत्व प्राप्त होना चाहिए। राष्ट्रीय स्तर पर कला जगत की समस्याओं के निदान के सम्बन्ध में सरकार से संवाद बनाए रखने के लिए एक समिति का गठन होना चाहिए, इत्यादि।

इन बिन्दुओं पर विचार करना आज आवश्यक हो गया है, क्योंकि प्राथमिक स्तर पर अन्य विषयों जैसा महत्व कला को नहीं मिल पाता। प्रायः इसे हाशिए पर रखा जाता है। जबकि एक अच्छा नागरिक बनने के लिए, जिसमें संवेदनशीलता हो, अपने राष्ट्र व संस्कृति के प्रति निष्ठा हो, कला–संस्कार आवश्यक है। छात्रों को शैक्षणिक भ्रमण के माध्यम से भारतीय कला/संस्कृति के समर्पित आदर्श धरोहरों, संग्रहालयों इत्यादि से साक्षात्कार कराए जाने और सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय रहने की आवश्यकता होती है। इससे उनका व्यक्तित्व निखरता है।

राष्ट्रीय स्तर की कला समिति का भी अपना महत्व है, जो अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की तरह ही कला–शिक्षा क्षेत्र में उपजी समस्याओं के निदान में रचनात्मक योगदान दे सके और शिक्षा के समान स्तर, पाठ्यक्रमों में यथोचित संशोधन, परिवर्धन इत्यादि पर दृष्टि रखते हुए उचित सलाह दे।

इन सभी बिन्दुओं के अतिरिक्त कला–जगत में एक ऐसी समस्या अपना विकराल रूप लेती जा रही है, जिसके प्रति सजग होने की आवश्यकता है–वह है माध्यमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक शिक्षकों की नियुक्ति सम्बन्धी परीक्षाएं। आज शिक्षकों की नियुक्तियों के लिए पहले सैद्धान्तिक पक्ष की परीक्षा होती है, (उच्च शिक्षा के लिए नेट, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की राष्ट्रीय शैक्षिक परीक्षा) और इसे उत्तीर्ण करने के उपरान्त ही साक्षात्कार होता है, वह भी प्रायः औपचारिकता ही होती है। जहाँ कला शिक्षा में प्रायोगिक और सैद्धान्तिक पक्ष बिल्कुल बराबर या साठ–चालीस के अनुपात में होता है, वहाँ केवल आधे या चालीस प्रतिशत पाठ्यक्रम के आधार पर परीक्षा लेकर कैसे अर्हता प्रमाण पत्र दिया जा सकता है? उल्लेखनीय है कि अभ्यर्थी को बिना इन लिखित परीक्षाओं को उत्तीर्ण किए प्रायोगिक क्षमता/दक्षता प्रमाणित करने का अवसर (साक्षात्कार) ही नहीं दिया जाता। आज जहाँ ललित कला पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की कला शिक्षा में रोजगार की संभावनाएं क्षीण होती जा रही हैं, वहीं प्रायोगिक विषय का प्रशिक्षण देने के लिए ऐसे अभ्यर्थियों का चयन हो रहा है, जो सैद्धान्तिक पक्ष के सहारे परीक्षाएं उत्तीर्ण कर यहाँ तक पहुंचे हैं। ऐसी चयन प्रक्रिया पर प्रश्न चिन्ह लगता है?

इस विषय में सोचना आवश्यक हो गया है कि इक्कीसवीं सदी में कला का भविष्य क्या होगा? कला अभियांत्रिकी और विज्ञान जैसा विषय नहीं है। कला में कोई निश्चित सिद्धान्त नहीं होता। यह कल्पना और संवेदना से जुड़ा प्रायोगिक विषय है। इसकी शिक्षा और प्रशिक्षकों की चयन प्रक्रिया में रचनात्मक परिवर्तन की आवश्यकता है अन्यथा कला समीक्षक और कला इतिहासकार तो होंगे पर कलाकार नहीं रह जाएंगे।

– अवधेश मिश्र

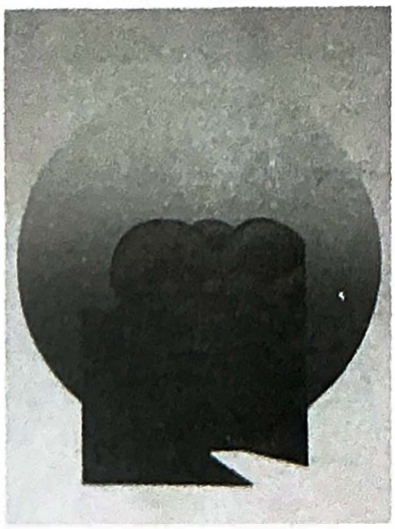

एचिंग, अवधेश अग्रवाल